# श्री बाहुबली

## विधान एवं दीप अर्चना


रचयिता

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत

**मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज**



प्रस्तोता

बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना

| | | |
|---|---|---|
| कृति | : | श्री बाहुबली ऋद्धि विधान एवं दीप अर्चना |
| आशीर्वाद | : | संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित<br>आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज |
| कृतिकार | : | अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत<br>मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज |
| संयोजक | : | बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना |
| संस्करण | : | प्रथम-दिसम्बर २०२०, १००० प्रतियाँ |
| कवर-पृष्ठ | : | प्राची जैन शिवपुरी |
| प्रसंग | : | १६ दिवसीय शांतिविधान<br>श्री चंद्रप्रभ दिगम्बर जैन मन्दिर शिवपुरी |
| लागत मूल्य | : | १५/- |
| प्रकाशक : | | श्री जैनोदय विद्या समूह |
| प्राप्ति स्थान | : | १. संजीव कुमार जैन<br>2/251 सुहाग नगर, फिरोजाबाद (उ.प्र.)<br>सम्पर्क–9412811798, 9412623916<br>२. निखिल, सुशील जैन करैरा, झाँसी<br>9806380757, 9407202065 |
| मुद्रक | : | विकास आफसेट, भोपाल |


<u>पुण्यार्जक</u>

**ब्र. विशाखा दीदी**

**श्री जगदीश-श्रीमती राजकुमारी जैन**

**श्री विशाल-श्रीमती चंदन जैन**

**श्रीमती विनीता-श्री रवि जैन (बिटिया-दामाद)**

**श्री विकास-श्रीमती चारु जैन**

**कु. अवनि, पीयूष, पर्व, गगन, विहान जैन**

**रवि बीज भण्डार, शिवपुरी (म.प्र.)**

## अन्तर्भाव

जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति कर्म काटने का सशक्त साधन है। जैसे लैंस के फोकस से कागज जल जाता है वैसे ही भक्ति के फोकस से हमारे कर्मरूपी कागज जल जाते हैं। भगवान् का नाम मात्र स्मरण करने से सभी किरणें फोकस बनकर पाप समूह को नष्ट करती हैं।

जिस तरह भक्तामर स्तोत्र के द्वारा श्रीवृषभदेव की भक्ति दीप अर्चना के माध्यम से की जाती है उसी तरह परम तपस्वी प्रथम कामदेव श्री बाहुबली भगवान की भक्ति करने का यह नया सोपान **संत शिरोमणि परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज** के सुयोग्य शिष्य **अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत पूज्य मुनि श्रीसुव्रतसागरजी महाराज** ने प्रस्तुत कृति '**श्री बाहुबली विधान एवं दीप अर्चना**' की रचना करके हम सबको दिया है जो कि भक्त को जन्म-जरा और मृत्यु से मुक्ति दिलाने वाला एवं अतिशय पुण्य को बढ़ाने वाला है। श्रद्धा के साथ भक्ति की भावना से २४ अर्घ्य/दीपों के साथ अथवा एक दीप के साथ यह आराधना करने से सभी इष्ट कार्य की सिद्धि होती है।

राजेश, अशोक, अर्चित, पुनीत, नमन, विशाल, रूपेश, सौरभ, रौनक, पीयूष, अभिषेक, रोहित, कलश पाठशाला की बहनें प्राची, ऐश्वर्या, चाहना, आशी, स्वाति, खुशी, प्रतिभा, रूपाली आदि लोगों ने इस कृति में जो भी सहयोग किया उन सबके लिए बहुत-बहुत साधुवाद। सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

**तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।**
**तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥**
**कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।**
**भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥**

**— बा. ब्र. संजय, मुरैना- 9425128817**

## मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहन्ताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

## मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बाबुल ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥ तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

## श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहन्त सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

**ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...।** (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

**ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।**

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।

नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

**ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।**

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

**ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।**

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

**ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।**

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

**ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।**

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

**ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।**

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, पीछे से चाकू घौंपें॥

बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

**ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।**

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

**ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।**

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

**ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥।**

## जयमाला (दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

**(भुजंगप्रयात)**

जितेन्द्री हितैषी अरिहन्त प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥१॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥२॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥३॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।

जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥५॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी॥८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

**ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।**

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

## श्री बाहुबली पूजन

**स्थापना (दोहा)**

बाहुबली कामदेव हैं, जिनशासन के धाम।
सबसे ऊँची मूर्ति को, नमोऽस्तु करें प्रणाम॥

**(शंभु)**

जय बाहुबली जय गोम्मटेश, जय कायोत्सर्ग प्रणेता की।
जय वृषभ सुनन्दा नन्दन की, परिषह उपसर्ग विजेता की॥
जैनासन में हे! निर्मोही, तुम सबको मोहित खूब करो।
हम मोहित तेरी मुद्रा पर, तुम हम पर दया जरूर करो॥
माँ पिता भाई बन्धु छोड़े, धन राज्य प्रजा से मुख मोड़े।
प्रभु! अर्जी हमारी सुनकर के, चित् ज्ञान छींटे मारो थोड़े॥
तो आत्म हमारी जाग उठे, फिर तजे मोह की निद्रा को।
अब करके नमोऽस्तु पूज रहे, प्रभु बाहुबली की मुद्रा को॥

**ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...।** (पुष्पांजलिं...)

इस दुनियाँ के रिश्ते नाते, हैं कच्ची माटी के कलशा।
ये साथ दूर तक दे देंगे, विश्वास नहीं इनका पल का॥
ये मतलब के रिश्ते तजने, प्रासुक जल सादर अर्पित हैं।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

**ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।**

जब चक्र चला अपने मारें, तो किन पर हम विश्वास करें।
इसलिए त्यागकर दुनियाँ को, वैराग्य धरें संन्यास धरें॥
हम बनें तपस्वी तुम जैसे, सो चंदन सादर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

**ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं...।**

तुम किए तपस्या एसी कि, पग से सिर तक लिपटी बेलें।
तब बने घौंसले बाँबी भी, तब तन पर सर्पादिक खेलें॥
तुम डरे नहीं हम डरें नहीं, सो अक्षत सादर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

**ॐ ह्री श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।**

धन दौलत नारी के खातिर, जब भाई-भाई को मार रहा।
यह अहं ब्रह्म की शल्य रही, किसको अर्हम् से प्यार यहाँ॥
हम ब्रह्म बिहारी तुम सम हों, सो पुष्पांजलि ये अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

**ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।**

उपवास वर्षभर कर तुमने, आहार किया न पिया पानी।
जो तीर्थंकर भी कर न सके, वो किए साधना तूफानी॥
हम भूख-प्यास तुम सम त्यागें, नैवेद्य तभी तो अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

**ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।**

जल मल्ल नेत्र युद्धों में भी, अग्रज चक्रेश्वर टिक न सके।
यह घोर स्वार्थ का अँधियारा, जिसमें निज पर कुछ दिख न सके॥
तज स्वार्थ जलाएँ निज ज्योति, सो दीप आरती अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

**ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।**

अपनों ने सगा बना करके, फिर दगा दिया फिर दाग दिया।
उपसर्ग परीषह सहकर भी, तुमने अपने से राग किया॥
संकल्प आप सम डिग न सके, सो धूप दशांगी अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

**ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।**

उपकार करोगे ना जब तक, तब तक तो चरण न हम छोड़ें।
तुम ठुकराओ या अपनाओ, विश्वास कभी न हम तोड़ें॥
हम चलें आपके कदमों पर, सो श्रीफल सादर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

**ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।**

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

**ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

**[यदि मात्र पूजन करना हो तो पेज नं. २१ पर जयमाला करके पूर्ण करना चाहिए।]**

**आस्था से रास्ता**
**खुद ही मिल जाएगा**
**तुम चाहो तो !**

**कुछ भी नहीं**
**करना पड़े ऐसा**
**कुछ कीजिए।**

## मंगलाचरण

ओम् नमः सिद्धेभ्य...।-४

**(जोगीरासा)**

जिनशासन की परम्परा में, चौबीसी के पहले।
कामदेव श्री बाहुबली जी, बने दिगम्बर सँभले॥
कायोत्सर्ग वर्ष भर करके, पाए ज्ञानानंदा।
हम तो सादर करें नमोस्ऽतु, बाहुबली जिनंदा॥
ओम् नमः सिद्धेभ्य...।

हर प्राणी निजमुक्ति तलाशें, बन्धन से घबराएँ।
परवश जीवन कभी न रुचना, स्वतन्त्रता को चाहें॥
इन भावों से ओत-प्रोत हो, बाहुबली वैरागे।
राज-पाठ की शल्य त्यागकर, मोह नींद से जागे॥
ओम् नमः सिद्धेभ्य...।

दुनियाँ के आतंक शान्त हों, ईर्ष्या भाव न आएँ।
सुखी स्वस्थ सब प्राणी होवें, बैर कषाय नशाएँ॥
भरत और श्री बाहुबली सम, युद्ध कर्म को काटो।
हे! उपसर्ग विजेता स्वामी, 'सुव्रत' को सुख बाँटो॥
ओम् नमः सिद्धेभ्य...।

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी ना होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
बाहुबली को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥
ओम् नमः सिद्धेभ्य...।

===

## श्री बाहुबली विधान अर्घ्यावली एवं दीप अर्चना

युद्ध दशा वर्णन

(लय–माता तू दया करके...)

भक्तों के सपनों में, प्रभु बाहुबली झूलें।
अब करो कृपा हम पर, हम शीघ्र चरण छू लें॥

जल युद्ध

है राग द्वेष ज्वाला, जो घर-घर में होती।
कैसे यह त्याग सकें, कब जले आत्म ज्योति॥
जल युद्ध विजेता जी, यह राग द्वेष हर लो।
हम करें नमोऽस्तु तो, तुम अपने सम कर लो॥
भक्तों के सपनों में...

**ॐ ह्रीं पारिवारिक-कलह-विनाशन-समर्थ जलयुद्ध-विजेता श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१॥**

मल्ल युद्ध

अब खेल अखाड़े का, घर-घर में होता है।
यह मल्ल युद्ध कैसा, जिससे दिल रोता है॥
तुम सम यह जीत सकें, ऐसा कुछ तो कर दो।
हम करें नमोऽस्तु तो, तुम अपने सम कर लो॥
भक्तों के सपनों में...

**ॐ ह्रीं मल्लाखेट-विनाशन-समर्थ मल्लयुद्ध-विजेता श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥॥२॥**

दृष्टि युद्ध

नजरों से ही नफरत हो, नजरों से ही होता प्यार।
सब खेल नजर के हैं, नजरों से हो जय हार॥
जय नजर करें तुम सम, नजरें हम पर कर दो।

हम करें नमोऽस्तु तो, तुम अपने सम कर लो॥
भक्तों के सपनों में...

**ॐ ह्रीं समस्त दृष्टि-विकृति-विनाशन-समर्थ दृष्टियुद्ध-विजेता श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥॥३॥**

अस्त्र युद्ध

जो चक्र तीर भाले, तज अस्त्रों के संग्राम।
फिर ध्यान चक्र धरके, पाए निज में विश्राम॥
हम अस्त्र तजें तुम सम, बस इतना साहस दो।
हम करें नमोऽस्तु तो, तुम अपने सम कर लो॥
भक्तों के सपनों में...

**ॐ ह्रीं अस्त्रभय-विकृति-विनाशन-समर्थ अस्त्रयुद्ध-विजेता श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥॥४॥**

शस्त्र युद्ध

तलवार चाकू आदि, वो शस्त्र युद्ध त्यागे।
फिर जैन साधना कर, तुम निज से अनुरागे॥
हम शस्त्र तजें तुम सम, यों आत्मशक्ति भर दो।
हम करें नमोऽस्तु तो, तुम अपने सम कर लो॥
भक्तों के सपनों में...

**ॐ ह्रीं शस्त्रभय-विकृति-विनाशन-समर्थ शस्त्रयुद्ध-विजेता श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥॥५॥**

गृह युद्ध

जब भाई ललकारे, जब मिले चुनौती तो।
तज अंतर युद्ध यही, पाए तुम मुक्ति को॥
गृह युद्ध तजें तुम सम, इतनी समता भर दो।
हम करें नमोऽस्तु तो, तुम अपने सम कर लो॥
भक्तों के सपनों में...

**ॐ ह्रीं गृह-विकृति-विनाशन-समर्थ गृहयुद्ध-विजेता श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥॥६॥**

देश युद्ध

जब देश-देश लड़ते, तो वही युद्ध होता।
जन धन की हानि करें, जिससे धर्मी रोता॥
हे देश युद्ध त्यागी!, बस विश्वशान्ति कर दो।
हम करें नमोऽस्तु तो, तुम अपने सम कर लो॥
भक्तों के सपनों में...

**ॐ ह्रीं देश-विकृति-विनाशन-समर्थ देशयुद्ध-विजेता श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥॥७॥**

शब्द युद्ध

जग में सबसे ज्यादा, बस शब्द बाण चलते।
सो मौन तपस्वी के, हम चरणों में रमते॥
अब बनें मौनप्रिय हम, तुम कोलाहल हर लो।
हम करें नमोऽस्तु तो, तुम अपने सम कर लो॥
भक्तों के सपनों में...

**ॐ ह्रीं शब्द-विकृति-विनाशन-समर्थ शब्दयुद्ध-विजेता श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥॥८॥**

विचार युद्ध

संग्राम विचारों की, दुनियाँ में आँधी चली।
जो उनको शुद्ध करे, वह सच्चा बाहुबली॥
यह तज तुम स्वस्थ हुए, अब हमें स्वस्थ कर दो।
हम करें नमोऽस्तु तो, तुम अपने सम कर लो॥
भक्तों के सपनों में...

**ॐ ह्रीं मानसिक-विकृति-विनाशन-समर्थ विचारयुद्ध-विजेता श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥॥९॥**

युद्ध का मूल

जड़ जोरु जमीनों से, सब युद्ध यहाँ ठनते।
जो इन्हें त्याग देते, वे बाहुबली बनते॥
हम तजें यही मूर्च्छा, वह मंत्र दान कर दो।
हम करें नमोऽस्तु तो, तुम अपने सम कर लो॥
भक्तों के सपनों में...

**ॐ ह्रीं युद्धमूल-विनाशन-समर्थ युद्धमूल-विजेता श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥॥१०॥**

सप्त परम स्थान वर्णन/ कर्त्रन्वय क्रिया

**(लय—भक्ति बेकरार है...)**

भक्ति बेशुमार है, आनन्द अपार है।
बहुबली भगवान की, हो रही जय जयकार है॥

सज्जाति क्रिया

दीक्षा योग्य वेश को पाके, धन्य किए तुम सज्जाति।
तुम सम हम भी बनें दिगम्बर, रत्नत्रय की दो ज्योति॥
भक्ति बेशुमार है...

**ॐ ह्रीं सज्जाति-दीक्षायोग्य कुल-प्रदायक श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥॥११॥**

सद्गृहित्व क्रिया

गृहस्थ दशा के सदाचार को, आप धरे फिर ली दीक्षा।
तुम सम आश्रम शुद्ध करें हम, एसी हमको दो शिक्षा॥
भक्ति बेशुमार है...

**ॐ ह्रीं सद्गृहित्व-दीक्षायोग्य पर्याय-प्रदायक श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥॥१२॥**

पारिव्राज्य क्रिया

तज संसार देह भोगों को, आप दिगम्बर रूप धरे।
तुम सम पारिव्राज्य बनें हम, सो चरणों में आन पड़े ॥
भक्ति बेशुमार है...

**ॐ ह्रीं पारिव्राज्य-दीक्षानुबन्धी-पुण्य-प्रदायक श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥॥१३॥**

सुरेन्द्र क्रिया

तुम तो मोक्ष गए हो स्वामी, हम समाधि को तरस रहे।
हमको स्वर्ग नहीं पाना बस, तुम सम बनने हरष रहे ॥
भक्ति बेशुमार है...

**ॐ ह्रीं सुरेन्द्रता-पद-प्रदायक श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥॥१४॥**

साम्राज्य क्रिया

चक्र रत्न के साथ-साथ में, दुनियाँ के सारे पद भी।
हमें न पाना हमको केवल, मिले आप जैसी पदवी॥
भक्ति बेशुमार है...

**ॐ ह्रीं साम्राज्य-पद-प्रदायक श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥॥१५॥**

आर्हन्त्य क्रिया

पाँच महाकल्याणक वाली, तीर्थंकर की मिले गली।
वो आर्हन्त्य क्रिया को करने, हमें बना लो बाहुबली॥
भक्ति बेशुमार है...

**ॐ ह्रीं आर्हन्त्य-पद-प्रदायक श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥॥१६॥**

परिनिर्वृत्ति क्रिया

जब अरिहन्त मोक्ष पाते तो, परिनिर्वाण वही होता।
जिसको तुम तो कर ही चुके हो, हम भी कर लें मन होता॥
भक्ति बेशुमार है...

**ॐ ह्रीं परिनिर्वृत्ति-क्रिया-प्रदायक श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥॥१७॥**

## केवली के प्रकार

तीर्थंकर केवली

(विष्णु)

अंतर बाहर की लक्ष्मी के, साँचे जैन धरम।
बाहुबली के पद कमलों में, करें नमोऽस्तु हम॥
पाँच तीन दो कल्याणक के, गुण छ्यालीस धरें।
वो तीर्थंकर पूज्य केवली, जग कल्याण करें॥
समवसरण के प्रभु की पूजा, बाहुबली उन सम।
बाहुबली के पद कमलों में, करें नमोऽस्तु हम॥

**ॐ ह्रीं वैभव-संपन्न-तीर्थंकर-पद-प्रदायक श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥॥१८॥**

सामान्य केवली

कल्याणक जिनके ना हों पर, बने केवली जो।
वो सामान्य केवली भगवन्, बाहुबली जी हो॥
जिनकी पूजा मोक्षमार्ग दे, दे समृद्धि धन।
बाहुबली के पद कमलों में, करें नमोऽस्तु हम॥

**ॐ ह्रीं विशेष-सामान्यकेवली-पद-प्रदायक श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥॥१९॥**

अन्तकृत केवली

उपसर्गों के होने पर यदि, मृत्यु निकट होती।
तब लघु अंतर्मुहूर्त में ही, जले ज्ञान ज्योति॥
बनें अन्तकृत वही केवली, बाहुबली आतम।
बाहुबली के पद कमलों में, करें नमोऽस्तु हम॥

**ॐ ह्रीं समस्त संकट-उपसर्ग-हर्त्ता श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥॥२०॥**

उपसर्ग केवली

हम उपसर्ग सहन कर मिलता, केवलज्ञान जिन्हें।
गंधकुटी में शोभित होकर, दें सद्ज्ञान हमें॥
पूज्य वही उपसर्ग केवली, बाहुबली भगवन।
बाहुबली के पद कमलों में, करें नमोऽस्तु हम॥

**ॐ ह्रीं समस्त-अवरोध-विरोध-हर्त्ता श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥॥२१॥**

मूक केवली

जिनको केवलज्ञान हुआ पर, खिरे नहीं वाणी।
मोक्ष प्राप्ति तक मौन रहे जो, सबके कल्याणी॥
मूक कवेली वही आप सम, हरते संकट गम।
बाहुबली के पद कमलों में, करें नमोऽस्तु हम॥

**ॐ ह्रीं समस्त-अशान्ति-हेतु-हर्त्ता श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥॥२२॥**

अनुबद्ध केवली

तीर्थंकर या अन्य केवली, जिस दिन मोक्ष गए।
तब बनते जब अन्य केवली, अंतर नहीं पड़े॥

वो अनुबद्ध केवली होवें, बाहुबली सम हम।
बाहुबली के पद कमलों में, करें नमोऽस्तु हम॥

**ॐ ह्रीं संस्कार-परम्परा-विधायक श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥॥२३॥**

समुद्घात केवली

आयु कर्म को छोड़ अन्य को, आयु योग्य करते।
आत्म प्रदेशों को फैला जो, कर्म हरण करते॥
समुद्घात वह कहे केवली, बाहुबली प्रियतम।
बाहुबली के पद कमलों में, करें नमोऽस्तु हम॥

**ॐ ह्रीं समानता-अधिकार-विधायक श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥॥२४॥**

(पूर्णार्घ्यं)

पर द्रव्यों की चिन्ता से तो, सुलझे बाहुबली।
किन्तु इन्हीं में सिद्ध बुद्ध सम, उलझी आत्मकली॥
अतः छुपा लो चेतन गृह में, पाएँ मोक्ष परम।
बाहुबली के पद कमलों में, करें नमोऽस्तु हम॥

**ॐ ह्रीं समस्तविध-संकट-उपद्रव-विनाशन-समर्थ श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥।**

**जाप्य मंत्र**

**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री बाहुबली-जिनेन्द्राय नमो नमः।**

## जयमाला

(दोहा)

तीर्थंकर से पूर्व जो, पाए पद निर्वाण।
दुनियाँ में यशवान हैं, बाहुबली भगवान॥

(ज्ञानोदय)

आदि प्रवर्तक आदिनाथ की, यशस्वती पटरानी थी।
तथा दूसरी रही सुनन्दा, सुन्दर बड़ी सयानी थी॥
दिया भरत को जन्म प्रथम ने, पहले हुए चक्रवर्ती।
तथा सुनन्दा बाहुबली को, जन्मी तो पूजे धरती॥१॥
राज्य भरत को दिया प्रभु ने, बाहुबली युवराज बने।
आदिनाथ ने दीक्षा ली फिर, मुक्तिवधू के राज बने॥
चक्ररत्न पा भरतेश्वर फिर, करने को दिग्विजय चले।
जब लौटे तो नगर द्वार पर, चक्र रुका जो खूब खले॥२॥
जिसका मतलब शेष रहा है, वश करना भ्राताओं को।
उनको आज्ञा मान्य नहीं सो, तजें सभी बाधाओं को॥
सबने ले ली जिन दीक्षा पर, बाहुबली प्रतिकार किए।
हम परतन्त्र बनें क्यों अब जब, पिता बराबर राज्य दिए॥३॥
दूतों को फटकारा ज्यों ही, तभी युद्ध की हवा चली।
एक तरफ तो भरत सैन्य था, एक तरफ थे बाहुबली॥
तभी मंत्रियों ने समझाया, लड़ते हो क्यों आपस में।
बिगड़ेगा तो कुछ न तुम्हारा, प्रजा पड़ेगी आफत में॥४॥
श्रेष्ठ यही कि युद्ध टालकर, बचिये जन-धन हानि से।
या फिर नेत्र मल्ल जल वाले, युद्ध करो आसानी से॥
विजय सुनिश्चित हो जाने पर, होगी फिर टकरार नहीं।

हुआ फैंसला युद्ध देखने, मंत्र मुग्ध तैयार सभी॥५॥
तब जल मल्ल नेत्र युद्धों में, बाहुबली जब विजित हुए।
तभी उन्हीं पर चक्रेश्वर जी, चक्र चलाकर कुपित हुए॥
हुआ चक्र से बाल न बाँका, बाहुबली पर आहत थे।
हाय! हाय! यह दुनियाँ जिसमें, रिश्ते नाते स्वारथ के॥६॥
भैया का व्यवहार देख यों, बनें विरागी बाहुबली।
दीक्षा लेकर बने तपस्वी, खड़े हुए मुनि बाहुबली॥
लता घौंसले सर्पादिक से, सत्कारे मुनि बाहुबली।
एक वर्ष उपवास देखकर, चक्री पूजे बाहुबली॥७॥
ज्यों भरतेश्वर ने पूजा तो, शल्य मिटाए बाहुबली।
मुझसे भैया दुखी हुआ ये, बात भुलाए बाहुबली॥
जैसे ही निश्शल्य हुए तो, बने केवली बाहुबली।
कर विहार कैलाश अचल से, मोक्ष गए प्रभु बाहुबली॥८॥
भले मोक्ष प्रभु चले गए पर, दिखें सामने बाहुबली।
इसीलिए तो जग मंदिर में, खूब पुजें प्रभु बाहुबली॥
गोम्मट राजा ने बनवाए, सबसे ऊँचे बाहुबली।
तभी गोम्मटेश्वर कहलाए, सबसे सुन्दर बाहुबली॥९॥
मुक्तिवधू संग मस्त हुए वो, दृश्य हमें कब झलकेंगे।
तुम बिन हम ना रह पाएंगे, सो चरणों में धमकेंगे॥
हमें बुला लो या आ जाओ, अर्जी यही हमारी है।
हमने अपना फर्ज निभाया, अब तो आपकी बारी है॥१०॥
फर्ज निभाते हैं हम अपना, चरणों में सर रखने का।
क्या तेरा भी फर्ज नहीं है, हाथ शीश पर रखने का॥

सदा रहे आशीष शीश पर, रात दिना बस बाहुबली।
बाहुबली बनने को 'सुव्रत', पूज रहे प्रभु बाहुबली॥११॥

(दोहा)

सवा पाँच सौ धनुष की, बाहुबली की देह।
महा बिम्ब के गीत गा, हमको मिले विदेह॥

**ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।**

बाहुबली स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, बाहुबली जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

## श्री बाहुबली—आरती

(छूम छूम छना नना...)

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम....
वृषभनाथ के राज-दुलारे, मात सुनन्दा के सुत प्यारे।-२
जन्म अयोध्या धारे, बाबा करूँ आरतिया ॥ करूँ...
किए वर्ष भर अनशन स्वामी, जय उपसर्ग विजेता ज्ञानी।-२
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ।२
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

===

## महिमा—श्री बाहुबली दीप अर्चना

(लय—श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री बाहुबली का पाठ, करो दिन रात, ठाठ से प्राणी।
हो हम सबको कल्याणी॥
श्री बहुबली गोम्टेश्वर जी, प्रभु कामदेव सम जिनवर जी।
उपसर्ग विजेता खड्गासन के स्वामी, हो हम सबको कल्याणी॥
श्री बाहुबली का...॥१॥

हे ! वृषभ-सुनन्दा के नन्दन, तज राज-पाठ भव का क्रंदन।
प्रभु हुए केवली मुक्तिरमा के स्वामी, हो हम सबको कल्याणी॥
श्री बाहुबली का...॥२॥

प्रभु जाप रोग दुख हर्त्ता है, संसार मोक्ष सुख कर्त्ता है।
सो इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र करें प्रणमामि, आशीष मिले वरदानी॥
श्री बाहुबली का...॥३॥

आशीष प्रभु का पाने को, नर जीवन सफल बनाने को।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी॥
श्री बाहुबली का...॥४॥

बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभु की कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥
श्री बाहुबली का...॥५॥

===

## गोम्मटेस-थुदि

(उपेन्द्रवज्रा)

विसट्ट - कंदोट्ट-दलाणुयारं, सुलोयणं चंद - समाण-तुण्डं।
घोणाजियं चम्पय-पुप्फसोहं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥ १॥
अच्छाय-सच्छं जलकंत गंडं, आबाहु दोलंत सुकण्ण पासं।
गइंद-सुण्डुज्जल-बाहुदण्डं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥ २॥
सुकण्ठ-सोहा जियदिव्व संखं, हिमालयुद्दाम विसाल कंधं।
सुपेक्ख णिज्जायल सुट्ठुमज्झं,तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥ ३॥
विंज्झाय लग्गे पविभासमाणं, सिहामणि सव्व-सुचेदियाणं।
तिलोय-संतोसय-पुण्णचंदं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥४॥
लयासमक्कंत - महासरीरं, भव्वावलीलद्ध सुकप्परुक्खं।
देविंदविंदच्चिय पायपोम्मं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥ ५॥
दियंबरो जो ण च भीइ जुत्तो, ण चांबरे सत्तमणो विसुद्धो।
सप्पादि जंतुप्फुसदो ण कंपो, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥ ६॥
आसां ण जो पेक्खदि सच्छदिट्ठि, सोक्खे ण वंछा हयदोसमूलं।
विराय भावं भरहे विसल्लं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥ ७॥
उपाहि मुत्तं धण-धाम-वज्जियं, सुसम्मजुत्तं मय-मोहहारयं।
वस्सेय पज्जंतमुववास-जुत्तं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥ ८॥

===

## गोम्मटेश अष्टक-१ (भावानुवाद)

(चौपाई)

नीलकमल दल जैसे नयना, चन्दा जैसा मुखड़ा है ना।
नासा लख चम्पा हुई पानी, उन गोम्टेश को सदा नमामि॥१॥

नभ जल जैसे गाल चमकते, कंधों तक तो कान लटकते।
भुजा दंड गज सूँड समानी, उन गोम्टेश को सदा नमामि॥२॥
कंठ शंख जैसा अनुपम है, वक्ष विशाल हिमालय सम है।
कटि प्रदेश अचल अभिरामी, उन गोम्टेश को सदा नमामि॥३॥
विंध्यगिरी पर चमक रहे जो, सब चैत्यों के प्रमुख रहे जो।
जग को सुख दें चंदा स्वामी, उन गोम्टेश को सदा नमामि॥४॥
जिनके तन पर चढ़ी लताएँ, जिन्हें कल्पतरु भव्य बताएँ।
जिन पद में सुर भी प्रणमामि, उन गोम्टेश को सदा नमामि॥५॥
जिन्हें न भय जो शुद्ध दिगम्बर, जिनके मन को रुचे न अम्बर।
सर्प आदि से कपित न स्वामी, उन गोम्टेश को सदा नमामि॥६॥
आश रहित समदर्शनधारी, सुख नहिं चाहें दोष निवारी।
भरत भ्रात में शल्य विरामी, उन गोम्टेश को सदा नमामि॥७॥
तजे उपाधी समता पाए, वित्त धाम मद मोह नशाए।
किए वर्ष भर अनशन स्वामी, उन गोम्टेश को सदा नमामि॥८॥

(दोहा)

प्राकृत में अष्टक रचे, 'नेमिचन्द्र' गुण गाए।
बाहुबली के पद्य में, 'सुव्रत' गीत सुनाए॥

===

**हीरा हीरा है**
**काँच काँच है किन्तु**
**ज्ञानी के लिए**

## गोम्टेश अष्टक—२

(दोहा)

नील कमल दल से नयन, मुख शशि समा विशेष।
चम्पा जय नासा करे, नित नत उन गोम्टेश॥१॥

कर्ण लटकते काँध तक, गज सूँडा कर भेष।
गाल नीर सम गगन से, नित नत उन गोम्टेश॥२॥

कंठ जीतता शंख को, बहु शुभ मध्यप्रदेश।
सीना हिमगिर सा अचल, नित नत उन गोम्टेश॥३॥

विंध्याचल पर चमकते, चैत्य श्रेष्ठ परमेश।
पूर्ण चन्द्र जग-हर्ष को, नित नत उन गोम्टेश॥४॥

बेल महातन पर चढ़ीं, पूजित चरण सुरेश।
कल्पवृक्ष भविवर्ग को, नित नत उन गोम्टेश॥५॥

अभय दिगम्बर शुद्ध जो, वस्त्र राग ना लेश।
सर्पादिक से कंप ना, नित नत उन गोम्टेश॥६॥

विमल दृष्टि आशा बिना, सुख वांछा ना शेष।
भरत शल्य बिन राग बिन, नित नत उन गोम्टेश॥७॥

घर-पद-धन-मद-मोह बिन, समता सहित महेश।
एक साल उपवासमय, नित नत उन गोम्टेश॥८॥

प्राकृत में अष्टक रचे, नेमिचन्द्र गुण गाय।
गोम्मटेश के पद्य में, 'सुव्रत' गीत सुनाय॥९॥

===

**भजन**

**(सखी)**

श्री बाहुबली जिनन्दा, माता तुम्हारी सुनन्दा।
हम तुमको करें नमोऽस्तु, मेटो भव-भव के फन्दा॥ (ध्रुव)

हैं नीलकमल सम नयना, नासा चम्पा की बहना।
प्रभु मुखड़ा चाँद का टुकड़ा, हैं गाल नीर सम गहना॥
गजराज सूँड़ सम बाहु, दो कर्ण छू रहे कन्धा।
हम तुमको करें नमोऽस्तु, मेटो भव-भव के फन्दा॥१॥

है कण्ठ शंख से प्यारा, कटिभाग अचल दृढ़ मन्दर।
प्रभु वक्ष हिमालय जैसा, तन कामदेव से सुन्दर॥
हैं सबसे सुन्दर अपने, प्रभु बाहुबली जिनन्दा।
हम तुमको करें नमोऽस्तु, मेटो भव-भव के फन्दा॥२॥

हैं दिव्य देह पर बेलें, जिस पर सर्पादिक खेलें।
फिर भी जो कभी न डरते, कब उनके चरणा छू लें॥
जो कल्पवृक्ष भव्यों के, सुखदाता पूरण चन्दा।
हम तुमको करें नमोऽस्तु, मेटो भव-भव के फन्दा॥३॥

खड्गासन पूर्ण दिगम्बर, निर्मोही शुद्ध निरम्बर।
उपवास वर्षभर करके, निश्शल्य हुए गोम्मटेश्वर॥
प्रभु दर्शनीय 'सुव्रत' को, दो निज सम जिन कलाकन्दा।
हम तुमको करें नमोऽस्तु, मेटो भव-भव के फन्दा॥४॥

**(पुष्पांजलिं...)**

===

# THE NINE FINE GOD WORSHIP

**Foundation (Couplet)**

Jain fan find to, nine fine God
Now quick start we, worshipping method.

**O! Nine fine god we want to do your worship so we respectfully invite you to please come here... come here...! please sit here... sit here...! please stay in our heart. (Flower offering)**

**(Quatrain)**

Water washes outer body,
inter we have soul some dirty.
But we want the soul divine,
so respect o! godhead nine.

**O! Nine fine god we want to stop our birth-death cycle so we worship you by pure water .**

Burning fire everywhere,
nothing peacefull life here.
But we want peacefull time,
so respect o! godhead nine.

**O! Nine fine god we want to stop our whole anger cycle so we worship you by pure sandal.**

Competition is very lengthy,
how to face it faith not healthy.
Please stop this emotional crime,
so respect o! godhead nine.

**O! Nine fine god we want to stop our this world cycle so we worship you by pure unbroken rices.**

Everybody servant of body,
nobody become boss of body.
But we don't want this world wine,
so respect o! godhead nine.

**O! Nine fine god we want our celibacy character for life so we worship you by pure flowers.**

Universal truth is diet,
how to defeat this hunger fight.
But we don't want food poison,
so respect o! godhead nine.

**O! Nine fine god we want to stop our hunger disease so we worship you by pure food items.**

Dark heart but lighted body,
this is way of sorrow melody.
Please give us your spirit shine,
so respect o! godhead nine.

**O! Nine fine god we want to stop our ignorance cycle so we worship you by pure lamp.**

Karma king is boss of gambler,
who comes in this world sin counsler.
But we want your victory sign,
so respect o! godhead nine.

**O! Nine fine god we want to stop our karma cycle so we worship you by pure incense (dhoop).**

Bad work give outcome wrong,
best work give outcome long.
Please give us your platinum coin,

so respect o! godhead nine.

**O! Nine fine god we want our bliss so we worship you by pure fruits.**

Good-good things of pure collection,
we want admission your section
Please give me your entry line,
so respect o! godhead nine.

**O! Nine fine god we want our priceless status so we worship you by mix things .**

**BAY OF THE NINE FINE GOD**

**(couplet )**

God has full purity, infinite virtues
Faithfully eccept it , faithless confuse

**(lion move)**

**1.** The first god lord Shri ARIHANTA half pure,
Donate all fans path pure and sure.
**2.** Second god lord Shri SIDDHA got soul,
They distribute gold goal left world role.
**3.** AACHARYA god lord great saints of jains,
They give the vows who closed our sins rains.
**4.** Dispatch UPADHYAY god light religions,
We take that long life light decision.
**5.** The fifth god lord JAIN'S MONKS saints head,
To get pure soul the pickup skyclad.
**6.** Jainism is the bliss way called JIN DHARMA,
Jainism principles written volume JIN AAGAMA.

**7.** Statues of the jain god called JIN CHAITYA,
The temple of the jain gods called JINALAYA.
**8.** We pray to nine god gain your devotees,
Give the excellence path right gravities.
**9.** So we want come to your happy- happy home,
Give the happy - happiness 'SUVRAT' wants 'om'.

**(couplet)**

Nine fine god give, right - right knowledge.
Every - every worshipper, dedicated age.

**O! Nine fine god we praise bay of worship you to be dedicated complite mix things . (Flower offring)**

===

## (Munishree's Arghya)

Accept charioteer for you,
chariot of bliss-city.
we want see of the temple of,
pure soul with joy-pity.
please accept for your devotees,
dedicated everyone.
This prayer with salutation,
you are munivar super one.

**O! Muni shree we want our priceless status so we worship you by mix things .**